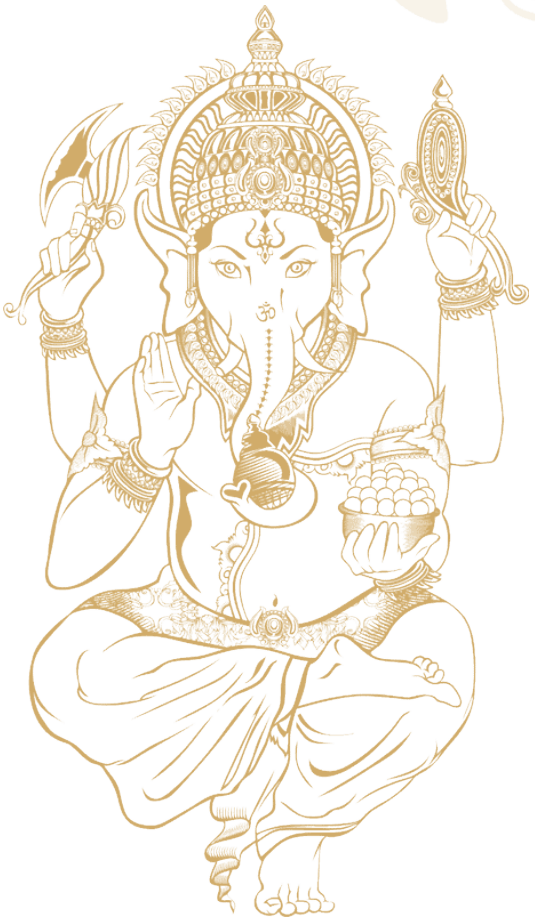

Mr.yogesh parmar

09 Dec 1988

12:36 PM

Mumbai

Model: All-Dosha-Report **Order No: 121430301**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**09/12/1988**
दिवस	शुक्रवार
जन्म समय	**12:36:00 कला**
इष्ट	13:58:18 घटी
स्थान	**Mumbai**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	18:58:00 उत्तर
रेखांश	72:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:38:40 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	11:57:20 कला
वेलान्तर	00:07:35 कला
साम्पातिक वेल	17:10:19 कला
सूर्योदय	07:00:40 कला
सूर्यास्त	18:01:35 कला
दिनमान	11:00:55 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्याचे अंश	23:43:54 वृश्चिक
लग्नाचे अंश	20:28:43 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	कुम्भ – शनि
राशि–स्वामी	**वृश्चिक – मंगळ**
नक्षत्र–चरण	**ज्येष्ठा – 3**
नक्षत्र स्वामी	बुध
योग	शूल
करण	किंस्तुघ्न
गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	यी–युगेश
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1910	मार्गशीर्ष	18
पंजाबी	संवत : 2045	मार्गशीर्ष	25
बंगाली	सन् : 1395	मार्गशीर्ष	23
तमिल	संवत : 2045	काभतगाई	24
केरल	कोल्लम : 1164	वृश्चिकम	24
नेपाली	संवत : 2045	मार्गशीर्ष	24
चैत्रादी	संवत : 2045	मार्गशीर्ष	कृष्ण 15
कार्तिकादी	संवत : 2045	कार्तिक	कृष्ण 15

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 15
तिथि समाप्ति वेल _____: 11:06:00
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 22:26:08 कला
जन्म योग _____: ज्येष्ठा
सूर्योदय समयी योग _____: धृति
योग समाप्ति वेल _____: 09:58:50 कला
जन्म योग _____: शूल
सूर्योदय समयी करण _____: नाग
करण समाप्ति वेल _____: 11:06:00 कला
जन्म करण _____: किंस्तुघ्न
भयात _____: 35:23:46
भभोग _____: 59:59:07
भोग्य दशा वेल _____: बुध 7 वर्ष 0 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____: आश्विन
तिथि _____: 1-6-11
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: रेवती
योग _____: व्यतिपात
करण _____: गर
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: वृश्चिक
रवि _____: मकर
चन्द्र _____: वृषभ
मंगळ _____: कुम्भ
बुध _____: वृश्चिक
गुरु _____: मीन
शुक्र _____: मेष
शनि _____: कर्क
राहु _____: वृषभ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

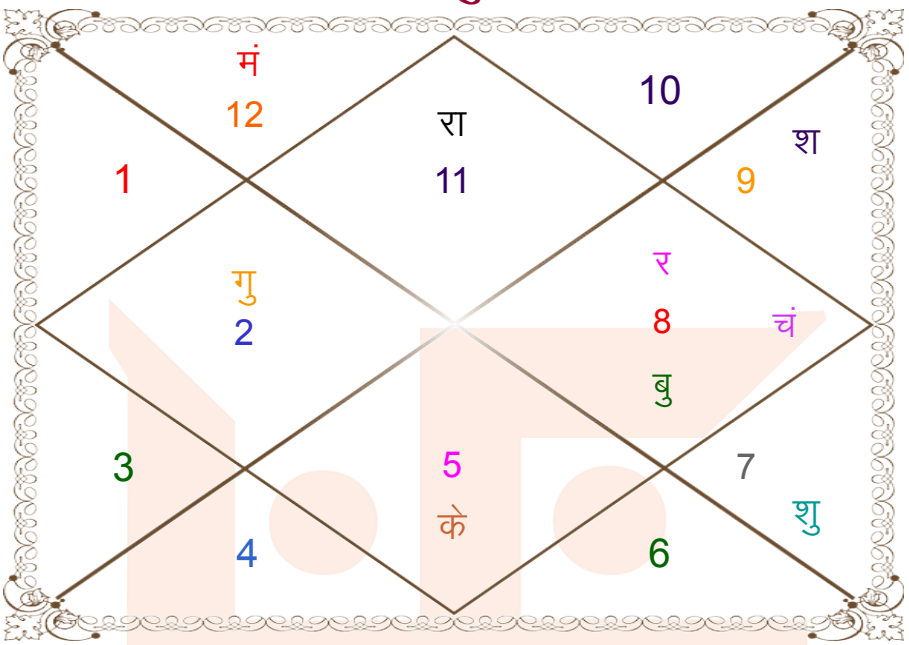

चन्द्र कुंडली

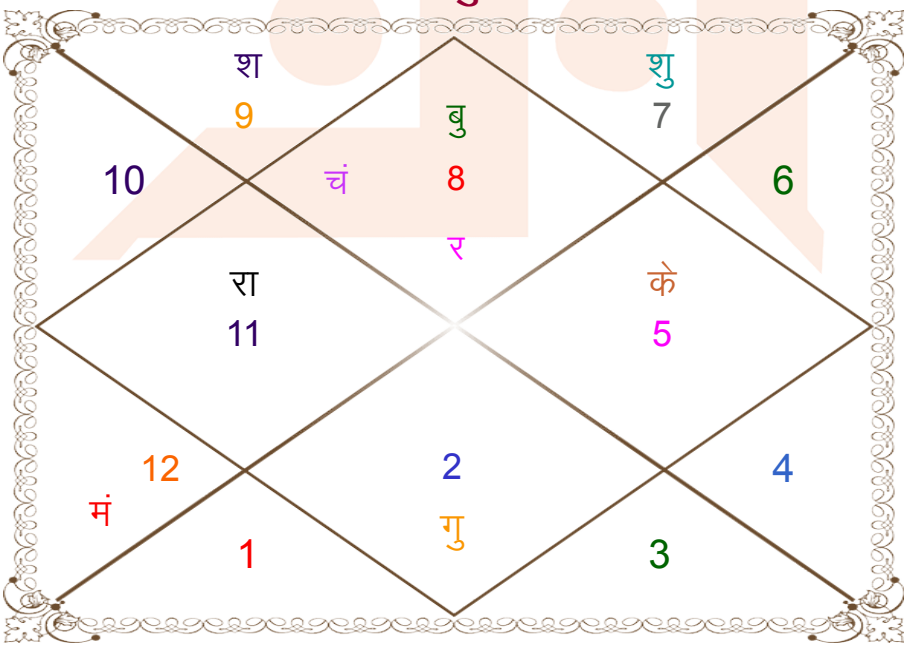

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

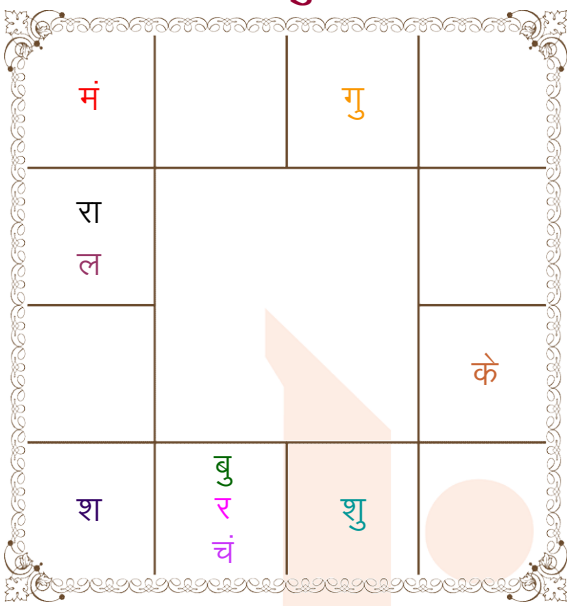

लग्न कुंडली

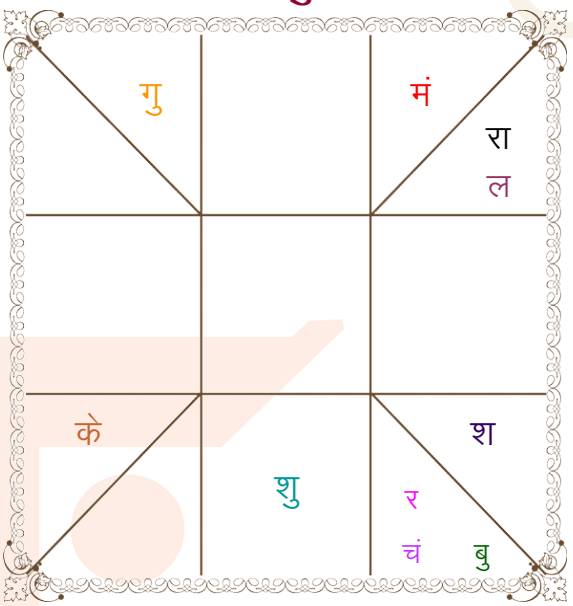

विंशोत्तरी
बुध 7वर्ष 0मा 3दि

बुध

09/12/1988

13/12/2098

बुध	13/12/1995
केतु	13/12/2002
शुक्र	13/12/2022
रवि	12/12/2028
चन्द्र	13/12/2038
मंगळ	13/12/2045
राहु	13/12/2063
गुरु	13/12/2079
शनि	13/12/2098

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 0मा 22दि

भद्रिका

01/01/2022

01/01/2027

भद्रिका	11/09/2022
उल्का	13/07/2023
सिद्धा	02/07/2024
संकटा	12/08/2025
मंगळा	01/10/2025
पिंगला	11/01/2026
धान्या	12/06/2026
भ्रामरी	01/01/2027

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	20:28:43	454:38:55	पू.भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	———
सूर्य			वृश्चि	23:43:54	01:00:59	ज्येष्ठा	3	18	मंगळ	बुध	मंगळ	मित्र राशि
चंद्र			वृश्चि	24:30:10	13:21:43	ज्येष्ठा	3	18	मंगळ	बुध	राहु	नीच राशि
मंगळ			मीन	15:57:44	00:24:32	उ.भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	गुरु	मित्र राशि
बुध		अ	वृश्चि	28:06:55	01:34:14	ज्येष्ठा	4	18	मंगळ	बुध	शनि	सम राशि
गुरु	व		वृष	05:12:52	00:07:21	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	25:46:33	01:14:35	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	स्वगृही
शनि			धनु	09:13:12	00:06:56	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
राहु	व		कुंभ	14:51:07	00:13:33	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	केतु	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	14:51:07	00:13:33	पू.फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	06:41:07	00:03:33	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	———
नेप			धनु	15:22:24	00:02:09	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	———
प्लूटो			तुला	20:08:47	00:02:07	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	———
दशम भाव			वृश्चि	24:52:19	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगळ	बुध	राहु	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:42:14

लग्न–चलित

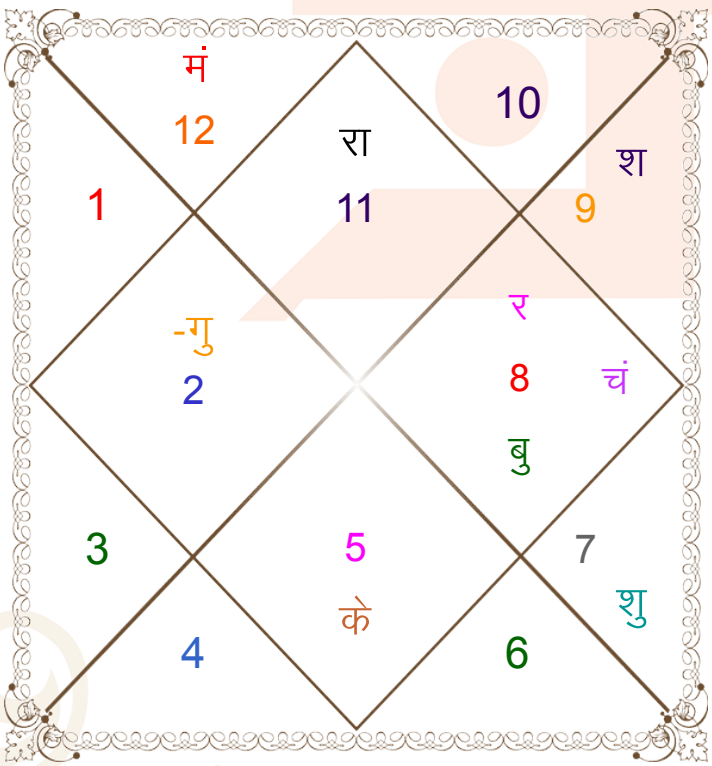

चन्द्र कुंडली

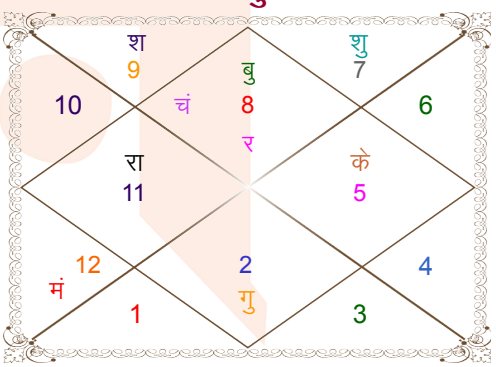

नवमांश कुंडली

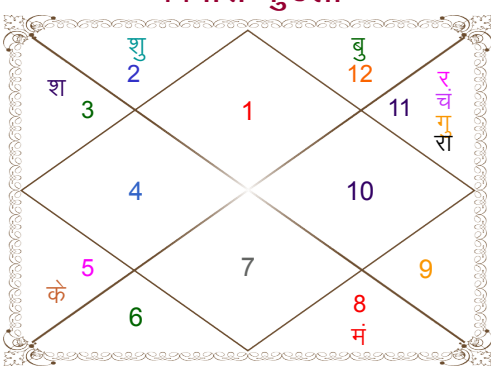

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	06:12:39	कुम्भ	20:28:43
2	मीन	06:12:39	मीन	21:56:35
3	मेष	07:40:31	मेष	23:24:27
4	वृषभ	09:08:23	वृषभ	24:52:19
5	मिथुन	09:08:23	मिथुन	23:24:27
6	कर्क	07:40:31	कर्क	21:56:35
7	सिंह	06:12:39	सिंह	20:28:43
8	कन्या	06:12:39	कन्या	21:56:35
9	तुला	07:40:31	तुला	23:24:27
10	वृश्चिक	09:08:23	वृश्चिक	24:52:19
11	धनु	09:08:23	धनु	23:24:27
12	मकर	07:40:31	मकर	21:56:35

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ	20:28:43
2	मीन	27:22:40
3	मेष	28:27:58
4	वृषभ	24:52:19
5	मिथुन	19:56:17
6	कर्क	17:16:35
7	सिंह	20:28:43
8	कन्या	27:22:40
9	तुला	28:27:58
10	वृश्चिक	24:52:19
11	धनु	19:56:17
12	मकर	17:16:35

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली

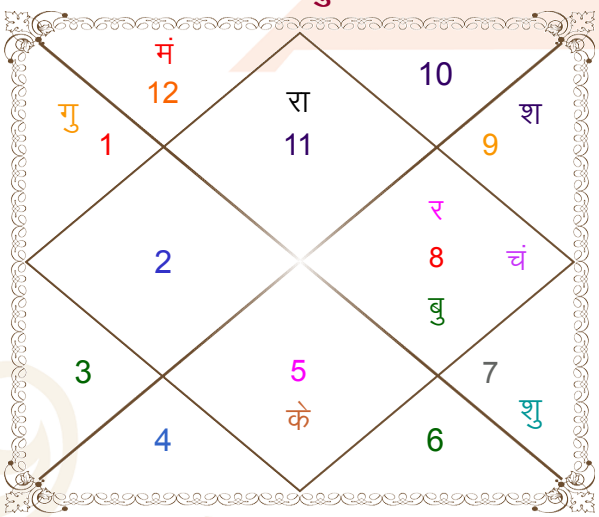

भाव कुंडली

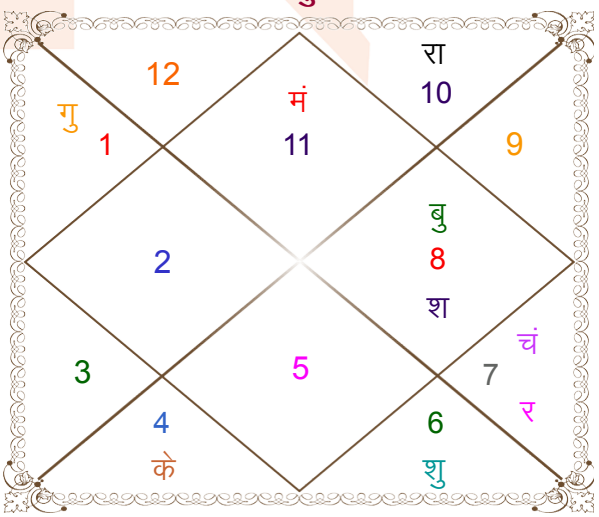

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	मातृ	पितृ	कुमार	मुदित	आगमन	2.43	38 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	बाल	भीत	आगमन	0.54	27 %
मंगळ	पुत्र	भ्रातृ	युवा	मुदित	निद्रा	4.89	38 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	बाल	विकल	आगमन	0.00	64 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत	खल	निद्रा	1.87	45 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	मृत	स्वस्थ	आगमन	1.92	61 %
शनि	ज्ञाति	आयुष्य	कुमार	निपीदित	भोजन	1.82	67 %
राहु	———	ज्ञान	युवा	मुदित	आगमन	0.00	39 %
केतु	———	मोक्ष	युवा	खल	भोजन	0.00	39 %
एकुण						**13.46**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य
आश्लेषा	मघा	पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा

चलित कुंडली

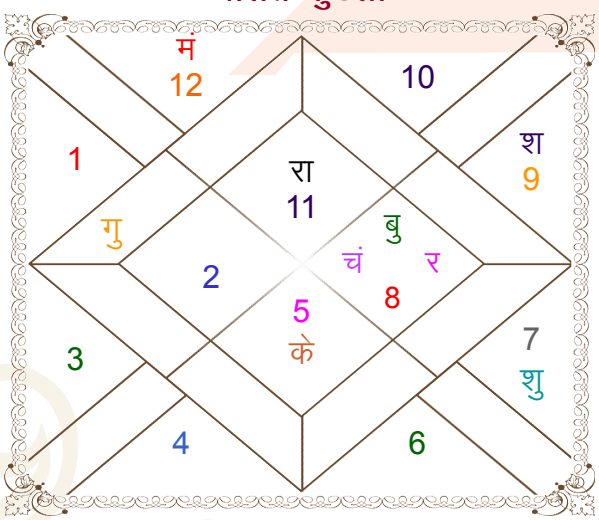

लग्न–चलित

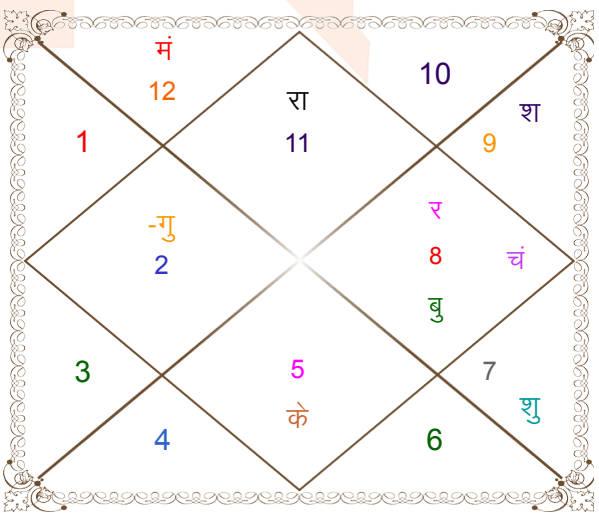

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : बुध 7 वर्ष 0 महिना 3 दिवस

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष	
09/12/1988		13/12/1995		13/12/2002		13/12/2022		12/12/2028	
13/12/1995		13/12/2002		13/12/2022		12/12/2028		13/12/2038	
	00/00/0000	केतु	10/05/1996	शुक्र	13/04/2006	सूर्य	01/04/2023	चंद्र	13/10/2029
	00/00/0000	शुक्र	10/07/1997	सूर्य	14/04/2007	चंद्र	01/10/2023	मंगळ	14/05/2030
	00/00/0000	सूर्य	15/11/1997	चंद्र	12/12/2008	मंगळ	06/02/2024	राहु	13/11/2031
	00/00/0000	चंद्र	16/06/1998	मंगळ	11/02/2010	राहु	31/12/2024	गुरु	14/03/2033
	00/00/0000	मंगळ	12/11/1998	राहु	11/02/2013	गुरु	19/10/2025	शनि	13/10/2034
	09/12/1988	राहु	01/12/1999	गुरु	13/10/2015	शनि	01/10/2026	बुध	13/03/2036
राहु	28/12/1990	गुरु	06/11/2000	शनि	13/12/2018	बुध	07/08/2027	केतु	12/10/2036
गुरु	04/04/1993	शनि	16/12/2001	बुध	13/10/2021	केतु	13/12/2027	शुक्र	13/06/2038
शनि	13/12/1995	बुध	13/12/2002	केतु	13/12/2022	शुक्र	12/12/2028	सूर्य	13/12/2038

मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
13/12/2038		13/12/2045		13/12/2063		13/12/2079		13/12/2098	
13/12/2045		13/12/2063		13/12/2079		13/12/2098		00/00/0000	
मंगळ	11/05/2039	राहु	25/08/2048	गुरु	30/01/2066	शनि	16/12/2082	बुध	11/05/2101
राहु	28/05/2040	गुरु	18/01/2051	शनि	13/08/2068	बुध	25/08/2085	केतु	09/05/2102
गुरु	04/05/2041	शनि	24/11/2053	बुध	18/11/2070	केतु	04/10/2086	शुक्र	09/03/2105
शनि	13/06/2042	बुध	13/06/2056	केतु	25/10/2071	शुक्र	03/12/2089	सूर्य	13/01/2106
बुध	10/06/2043	केतु	01/07/2057	शुक्र	25/06/2074	सूर्य	15/11/2090	चंद्र	14/06/2107
केतु	07/11/2043	शुक्र	01/07/2060	सूर्य	14/04/2075	चंद्र	16/06/2092	मंगळ	11/06/2108
शुक्र	06/01/2045	सूर्य	26/05/2061	चंद्र	13/08/2076	मंगळ	26/07/2093	राहु	10/12/2108
सूर्य	13/05/2045	चंद्र	25/11/2062	मंगळ	19/07/2077	राहु	31/05/2096		00/00/0000
चंद्र	13/12/2045	मंगळ	13/12/2063	राहु	13/12/2079	गुरु	13/12/2098		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल बुध 6 वर्ष 11 मा 19 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
19/10/2025		01/10/2026		07/08/2027		13/12/2027		12/12/2028	
01/10/2026		07/08/2027		13/12/2027		12/12/2028		13/10/2029	
शनि	13/12/2025	बुध	14/11/2026	केतु	15/08/2027	शुक्र	12/02/2028	चंद्र	07/01/2029
बुध	31/01/2026	केतु	02/12/2026	शुक्र	05/09/2027	सूर्य	01/03/2028	मंगळ	24/01/2029
केतु	20/02/2026	शुक्र	23/01/2027	सूर्य	11/09/2027	चंद्र	01/04/2028	राहु	11/03/2029
शुक्र	19/04/2026	सूर्य	07/02/2027	चंद्र	22/09/2027	मंगळ	22/04/2028	गुरु	21/04/2029
सूर्य	06/05/2026	चंद्र	05/03/2027	मंगळ	29/09/2027	राहु	16/06/2028	शनि	08/06/2029
चंद्र	04/06/2026	मंगळ	23/03/2027	राहु	19/10/2027	गुरु	03/08/2028	बुध	21/07/2029
मंगळ	24/06/2026	राहु	09/05/2027	गुरु	05/11/2027	शनि	30/09/2028	केतु	08/08/2029
राहु	15/08/2026	गुरु	19/06/2027	शनि	25/11/2027	बुध	21/11/2028	शुक्र	27/09/2029
गुरु	01/10/2026	शनि	07/08/2027	बुध	13/12/2027	केतु	12/12/2028	सूर्य	13/10/2029

चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
13/10/2029		14/05/2030		13/11/2031		14/03/2033		13/10/2034	
14/05/2030		13/11/2031		14/03/2033		13/10/2034		13/03/2036	
मंगळ	25/10/2029	राहु	04/08/2030	गुरु	17/01/2032	शनि	13/06/2033	बुध	25/12/2034
राहु	26/11/2029	गुरु	16/10/2030	शनि	03/04/2032	बुध	03/09/2033	केतु	24/01/2035
गुरु	24/12/2029	शनि	11/01/2031	बुध	11/06/2032	केतु	07/10/2033	शुक्र	21/04/2035
शनि	27/01/2030	बुध	29/03/2031	केतु	09/07/2032	शुक्र	11/01/2034	सूर्य	17/05/2035
बुध	26/02/2030	केतु	30/04/2031	शुक्र	28/09/2032	सूर्य	09/02/2034	चंद्र	29/06/2035
केतु	11/03/2030	शुक्र	31/07/2031	सूर्य	23/10/2032	चंद्र	29/03/2034	मंगळ	29/07/2035
शुक्र	15/04/2030	सूर्य	27/08/2031	चंद्र	02/12/2032	मंगळ	02/05/2034	राहु	14/10/2035
सूर्य	26/04/2030	चंद्र	12/10/2031	मंगळ	31/12/2032	राहु	28/07/2034	गुरु	22/12/2035
चंद्र	14/05/2030	मंगळ	13/11/2031	राहु	14/03/2033	गुरु	13/10/2034	शनि	13/03/2036

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु	
13/03/2036		12/10/2036		13/06/2038		13/12/2038		11/05/2039	
12/10/2036		13/06/2038		13/12/2038		11/05/2039		28/05/2040	
केतु	26/03/2036	शुक्र	22/01/2037	सूर्य	22/06/2038	मंगळ	21/12/2038	राहु	07/07/2039
शुक्र	30/04/2036	सूर्य	21/02/2037	चंद्र	08/07/2038	राहु	13/01/2039	गुरु	28/08/2039
सूर्य	11/05/2036	चंद्र	13/04/2037	मंगळ	18/07/2038	गुरु	02/02/2039	शनि	27/10/2039
चंद्र	29/05/2036	मंगळ	19/05/2037	राहु	15/08/2038	शनि	25/02/2039	बुध	21/12/2039
मंगळ	10/06/2036	राहु	18/08/2037	गुरु	08/09/2038	बुध	18/03/2039	केतु	12/01/2040
राहु	12/07/2036	गुरु	07/11/2037	शनि	07/10/2038	केतु	27/03/2039	शुक्र	16/03/2040
गुरु	09/08/2036	शनि	11/02/2038	बुध	02/11/2038	शुक्र	21/04/2039	सूर्य	04/04/2040
शनि	12/09/2036	बुध	09/05/2038	केतु	12/11/2038	सूर्य	28/04/2039	चंद्र	06/05/2040
बुध	12/10/2036	केतु	13/06/2038	शुक्र	13/12/2038	चंद्र	11/05/2039	मंगळ	28/05/2040

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र	
28/05/2040		04/05/2041		13/06/2042		10/06/2043		07/11/2043	
04/05/2041		13/06/2042		10/06/2043		07/11/2043		06/01/2045	
गुरु	13/07/2040	शनि	07/07/2041	बुध	03/08/2042	केतु	19/06/2043	शुक्र	17/01/2044
शनि	05/09/2040	बुध	03/09/2041	केतु	25/08/2042	शुक्र	14/07/2043	सूर्य	07/02/2044
बुध	23/10/2040	केतु	26/09/2041	शुक्र	24/10/2042	सूर्य	21/07/2043	चंद्र	13/03/2044
केतु	12/11/2040	शुक्र	03/12/2041	सूर्य	11/11/2042	चंद्र	03/08/2043	मंगळ	07/04/2044
शुक्र	08/01/2041	सूर्य	23/12/2041	चंद्र	11/12/2042	मंगळ	12/08/2043	राहु	10/06/2044
सूर्य	25/01/2041	चंद्र	26/01/2042	मंगळ	01/01/2043	राहु	03/09/2043	गुरु	06/08/2044
चंद्र	22/02/2041	मंगळ	18/02/2042	राहु	25/02/2043	गुरु	23/09/2043	शनि	12/10/2044
मंगळ	14/03/2041	राहु	20/04/2042	गुरु	14/04/2043	शनि	16/10/2043	बुध	12/12/2044
राहु	04/05/2041	गुरु	13/06/2042	शनि	10/06/2043	बुध	07/11/2043	केतु	06/01/2045

मंगळ - सूर्य		मंगळ - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
06/01/2045		13/05/2045		13/12/2045		25/08/2048		18/01/2051	
13/05/2045		13/12/2045		25/08/2048		18/01/2051		24/11/2053	
सूर्य	12/01/2045	चंद्र	31/05/2045	राहु	09/05/2046	गुरु	20/12/2048	शनि	02/07/2051
चंद्र	23/01/2045	मंगळ	13/06/2045	गुरु	18/09/2046	शनि	07/05/2049	बुध	27/11/2051
मंगळ	30/01/2045	राहु	15/07/2045	शनि	21/02/2047	बुध	09/09/2049	केतु	26/01/2052
राहु	18/02/2045	गुरु	12/08/2045	बुध	11/07/2047	केतु	30/10/2049	शुक्र	18/07/2052
गुरु	07/03/2045	शनि	15/09/2045	केतु	06/09/2047	शुक्र	25/03/2050	सूर्य	08/09/2052
शनि	28/03/2045	बुध	15/10/2045	शुक्र	18/02/2048	सूर्य	08/05/2050	चंद्र	04/12/2052
बुध	15/04/2045	केतु	27/10/2045	सूर्य	07/04/2048	चंद्र	20/07/2050	मंगळ	02/02/2053
केतु	22/04/2045	शुक्र	02/12/2045	चंद्र	28/06/2048	मंगळ	09/09/2050	राहु	08/07/2053
शुक्र	13/05/2045	सूर्य	13/12/2045	मंगळ	25/08/2048	राहु	18/01/2051	गुरु	24/11/2053

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
24/11/2053		13/06/2056		01/07/2057		01/07/2060		26/05/2061	
13/06/2056		01/07/2057		01/07/2060		26/05/2061		25/11/2062	
बुध	05/04/2054	केतु	05/07/2056	शुक्र	31/12/2057	सूर्य	17/07/2060	चंद्र	10/07/2061
केतु	30/05/2054	शुक्र	07/09/2056	सूर्य	24/02/2058	चंद्र	14/08/2060	मंगळ	11/08/2061
शुक्र	01/11/2054	सूर्य	26/09/2056	चंद्र	26/05/2058	मंगळ	02/09/2060	राहु	01/11/2061
सूर्य	17/12/2054	चंद्र	28/10/2056	मंगळ	29/07/2058	राहु	21/10/2060	गुरु	13/01/2062
चंद्र	05/03/2055	मंगळ	19/11/2056	राहु	09/01/2059	गुरु	04/12/2060	शनि	10/04/2062
मंगळ	28/04/2055	राहु	16/01/2057	गुरु	04/06/2059	शनि	25/01/2061	बुध	27/06/2062
राहु	15/09/2055	गुरु	08/03/2057	शनि	25/11/2059	बुध	13/03/2061	केतु	29/07/2062
गुरु	17/01/2056	शनि	08/05/2057	बुध	28/04/2060	केतु	01/04/2061	शुक्र	28/10/2062
शनि	13/06/2056	बुध	01/07/2057	केतु	01/07/2060	शुक्र	26/05/2061	सूर्य	25/11/2062

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	9
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 2
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिवस	शुक्र, शनि, मंगळ
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगळ
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	वृषभ, तुला, धनु
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	लाजवर्त, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, काली गाय, खडाउ
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	98%	भाग्योदय, सुख
नीलम	शनि	75%	धनार्जन, कम खर्च, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	73%	स्वास्थ्य, धनार्जन
पोवले	मंगळ	70%	धन, पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पुष्कराज	गुरु	70%	सुख, धनार्जन, धन
माणिक्य	सूर्य	66%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
पन्ना	बुध	66%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, दुर्घटणा पासून सुरक्षा
लहसुनिया	केतु	61%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	12%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

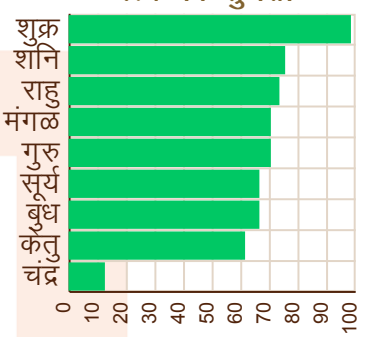

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	13/12/1995	72%	0%	70%	78%	70%	100%	75%	73%	61%
केतु	13/12/2002	53%	0%	77%	66%	70%	100%	62%	61%	73%
शुक्र	13/12/2022	53%	0%	70%	72%	70%	100%	81%	80%	67%
सूर्य	12/12/2028	78%	25%	77%	66%	77%	86%	62%	61%	47%
चंद्र	13/12/2038	72%	38%	70%	72%	70%	98%	75%	61%	47%
मंगळ	13/12/2045	72%	25%	83%	53%	77%	98%	75%	61%	67%
राहु	13/12/2063	53%	0%	58%	66%	70%	100%	81%	86%	47%
गुरु	13/12/2079	72%	25%	77%	53%	83%	86%	75%	73%	61%
शनि	13/12/2098	53%	0%	58%	72%	70%	100%	88%	80%	47%

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	09/12/1988-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
चतुर्थस्थान चरण	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
अष्टमस्थान चरण	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
साढ़ेसातीचा पहला चरण	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
चतुर्थस्थान चरण	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
अष्टमस्थान चरण	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
चतुर्थस्थान चरण	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
अष्टमस्थान चरण	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
साढ़ेसातीचा पहला चरण	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	धनार्जन
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	स्वास्थ्य
अष्टमस्थान चरण	शुभ	सन्तति
साढ़ेसातीचा पहला चरण	शुभ	भाग्योदय
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	सम	व्यावसायिक परेशानी

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमची जन्म कुण्डीत मंगळ द्वितीय भावात आहे, हा भाव वाणी आणि कुटुम्ब संबन्धी भाव आहे अतः मंगळ चा प्रभाव पासून तुमचे परिवार ची सुख शांति तसेच समृद्धि सामान्य रहणारी. तसेच कधीं–मधीं परिवार मधे मतभेद होउ सकतात. या मुळे दक्षिण भारत ला यांचा नाव (कुज दोष) आहे, तुमची वाणी मधे ओजस्विता रहणारी तसेच आपण पासून सर्व प्रभावित रहणारे सम्पत्ती साठी हा स्थिति चांगली रहणारी. तसेच स्वतः चे परिश्रम आणि पराक्रम पासून धन आणि सुख संपत्ति प्राप्त करून परिवार संतुष्ट कराय ची समर्थता रहणारी. कुंडलीत द्वितीय भाव चा मंगळ पंचम भाव वर दृष्टि पासून पुत्र संतति होणार तसेच जीवन मधे पूर्ण सुख आणि सहयोग ची प्राप्ति होणारी. पण संतति प्राप्ति साठी काही उसीर होउ सकतात आपण उच्च शिक्षा ग्रहण करणारी. अष्टम भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य तसेच कधीं–मधीं पित्त आणि–उष्णता पासून त्रास होउ सकतात, पण यांचा दुष्प्रभाव नाय होणार. सांसारिक महत्वांचे शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होणारे. नवम भाव वर मंगळ ची दृष्टि पासून आपण कोणी पण कार्य मधे परिश्रम पासून भाग्य चे निर्माण करणारे तसेच जीवन मधे उन्नति चे रस्ते वर चलणारे आपण भाग्य मधे कमी आणि कर्म मधे जास्ती विश्वास ठेवणारे. द्वितीय भाव मंगळ चा प्रभाव पासून पारिवारिक सुख शांति तसेच समृद्धि नेहमी ठेवणार परिवार चा उचित पालण करणारे ते पण तुम्हाला सुखांचा सहयोग देणारे. दांपत्य जीवन सुखी ठेवाय साठी तुम्हाला मांगळिक शिवाय पासून विवाह करायला पाहिजे, या पासून तुम्हाला सुखी जीवन आणि साधन संपन्न तसेच परस्पर सहयोग मिळेल आणि मानसिक संतुष्टि प्राप्त होणारी.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता हैं। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई मे जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता हैं। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते है, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता हैं। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म कुंभ लग्नी झाला आहे, त्यामुळे आरोग्याच्या घ्ष्टीने स्वस्थ असाल तसेच शरीरामध्ये बळदेखील असेल. मनामध्ये चांचल्य असेल, पण व्यक्तिमत्व आकर्षक असेल, आणि त्यामुळे आपले अनेक मित्र बनतील. आपण एक आधुनिक व क्रांतीकारी विचारांची व्यक्ती असाल आणि जुन्या रीतिरिवाजांची संपूर्ण उपेक्षा कराल, त्याचबरोबर काही रूढ रिवाज समाजातून नष्ट करण्यासाठी तुम्ही क्रांती किंवा आंदोलन सुद्धा करण्याचा विचार कराल. समाजाबद्दल आपल्या मनामध्ये प्रेम व सहानुभूती असेल, पण आपणहून लोकांशी मिसळणार नाही. धर्मावर विशेष रूची असणार नाही तसेच धार्मिक नेत्यांचे मार्गदर्शन किंवा शिक्षणाचा आपल्यावर काही प्रभाव पडणार नाही. आधुनिक प्रश्न व समस्यांचा प्राचीन समस्यांशी तुलनात्मक अभ्यास करण्याचा प्रयत्न कराल. साहित्य व कलेमध्ये रूची असेल तसेच उत्तम वक्तासुद्धा होऊ शकाल. मन कोमल असेल. तुम्ही शुभ व महत्वाची कामे हळुहळू पण कष्टाने पूर्ण कराल. याव्यतिरिक्त न्याय भावना प्रबळ असेल तसेच भौतिक सुख साधनानी युक्त होऊन त्याचा आनंदाने उपभोग घ्याल.

आपला सांसारिक घष्टिकोन विशाल असेल आणि आधुनिकतेची पूर्ण छाप असेल. कोणतेही काम किंवा व्यसन उन्मुक्तपणे लोकांच्या सान्निध्यात पूर्ण कराल, त्यामुळे तुम्हाला श्रेष्ठ अशा व्यक्ती नाखुश असतील. अभ्यासामध्ये रूचि असेल आणि कष्टाने शास्त्रांचे अध्ययन करून त्यात विद्वत्ता प्राप्त कराल. समाज किंवा इतरेजनांची दौर्बल्य समजण्यामध्ये चतुर असाल आणि अनेकदा या दुर्बलतेचा फायदा घेऊन कोणतेही आंदोलन किंवा इतर कार्य प्रारंभ कराल. नेतृत्वसुद्धा मिळू शकते. भावुकतेचा अभाव असेल आणि स्वच्छंद व स्वतंत्रपणे प्रापंचिक कामे पूर्ण कराल. सूक्ष्म घष्टीसुद्धा असल्याने इतरेजनांना प्रभावित करू शकाल. त्यामुळे समाजात अपेक्षित मानसन्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त होईल. प्रेमळ स्वभाव असेल. इच्छाशक्ती प्रबळ असेल व प्रवृत्ती एकांतप्रिय असेल. परंतु आयुष्यात धनार्जन करण्यासाठी अतिशय कष्ट घ्यावे लागतील. आपले गुप्त शत्रू किंवा त्यांच्या गुप्त कृत्यांहून तुम्हाला धनार्जन करण्यात समस्या येईल. कुटुंब तसेच पत्नीकडून पूर्ण सुख व आनंद मिळेल, पण मित्रांकडून सुख कमी मिळेल. प्रवास भरपूर होईल आणि भावाकडून व्यापारात त्रास होऊ शकतो. आयुष्यात कधी कधी अवडंबर दाखवाल पण अभ्यासू, ज्ञानी, कष्टाळू व सूक्ष्म हृदयी असल्याने काळ आनंदात घालवाल. यथोक्तम –

घ्लोलस्वान्तोळतयन्तसन्जातकामश्चंचछेहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे।
सस्यारम्भःसम्भ वैर्युक्सदम्भश्रेत्यात्कुम्भे संभवो यस्य लग्ने।।

– जातकाभरणम

म्हणजे कुंभ लग्नामध्ये जन्मलेला मनुष्य चंचल, कामी व रूपवान असतो. मित्रांशी प्रेमळ, धन्यादि उपार्जन करणारा व अवडंबरी असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण दार्शनिक वृत्ती तसेच स्वप्नघ्टा प्रवृत्ती असेल. स्पष्टवक्ते असल्याने आपले विचार इतरांसमोर स्पष्टपणे मांडाल. अत्यंत उदार स्वभाव असल्याने समाजाची सेवा व मदत करण्यास नेहमी तत्पर असाल. स्वभावाने विनम्र असाल आणि अनोळखी व्यक्तीसुद्धा पहिल्या भेटीतच आपला मित्र होण्यास उत्सुक असेल. आपले विचार व्यक्त करताना आपल्या श्रोत्यांच्या इच्छेनुसार आपल्या वक्तव्याला नवे रूप देण्याची क्षमता असेल, ज्यामुळे लोक अत्यंत प्रभावित होतील, पण कधी कधी आत्मविश्वास ढासळेल.

कौटुंबिक सुख शांती व समृद्धी चांगली असेल आणि कुटुंबाच्या सुखासाठी आपल्या विचारांमध्ये बदल घडवाल. आपल्याला सुंदर व स्वादिष्ट भोजन आवडते, त्यातही गोड व चटपटीत स्वाद विशेष प्रिय आहे. सामान्यपणे तुमची आवड इतरांपेक्षा भिन्न असेल. वाणीमध्ये माधुर्य असेल तसेच नैसर्गिक घ्ष्ये पाहणे आवडते. जमीन, मालमत्ता, वाहन तसेच बहुमूल्य वस्तू प्राप्त कराल. अचानक धनप्राप्ती व आई–वडिलांची संपत्तीमुळे धनवान व्हाल आणि सुखाने आयुष्य जगाल.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शुक्राची वृषभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान व चांगल्या स्वभावाची असेल. शांत स्वभावामुळे पतीशी त्यांचे चांगले संबंध असतील. आनंदाने गृहस्थी जीवनाचे पालन करेल आणि कुटुंबाला सुख देण्याचा प्रयत्न करेल. कर्तव्यनिष्ठ आईच्या रूपात मुलांची पूर्ण काळजी घेईल आणि प्रेमाने पालनपोषण करेल. त्यामुळे तुम्ही सर्व मुले आयुष्यभर आईचे ऋणी असाल. तुम्हीसुद्धा आईला पूर्ण सुख व सहयोग करून श्रद्धेने तिची सेवा कराल.

तुमचे घर सुंदर व आकर्षक असेल. सर्व आधुनिक सुखसुविधा प्राप्त कराल व सर्व भौतिक उपकरणांनी घर सुसज्ज असेल आणि शांत व आनंदाने कौटुंबिक जीवन घालवाल. उच्च शिक्षणामध्ये आपल्याला किंचित समस्यांना तोंड द्यावे लागेल, पण बुद्धिमान व्यक्ती या नात्याने कष्टाने उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. लेखनामध्ये रस असेल आणि त्यातून प्रसिद्धी मिळवाल. स्पर्धात्मक परिक्षेत यश मिळवाल. साधु–महात्म्यांच्या कृपेमधून काही गुप्त विद्यासुद्धा प्राप्त करू शकाल, तसेच ज्योतिष, तंत्र, मंत्रामध्ये रस असेल. आपल्या बुद्धि आणि पात्रतेच्या जोरावर एखादे उच्च पद प्राप्त कराल व आनंदाने संयम व कष्टाने सुख प्राप्त कराल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व प्रतिभाशाली व्यक्ती असाल. त्याचबरोबर शैक्षणिक यश पूर्णपणे प्राप्त कराल. कुशाग्र बुद्धि असल्याने कोणताही विषय पटकन आत्मसात कराल. त्यामुळे उत्तम यश मिळवाल. द्विस्वभाव राशीमुळे जीवनात बदल आवडतो. हा सिद्धांत तुम्ही प्रेम व शृंगारामध्येसुद्धा लागू करण्यात तुम्हाला आनंद मिळतो. भावनांवर विचारांनी नियंत्रण ठेवत असल्याने चूक क्वचितच होईल. प्रेम किंवा मायासुद्धा बुद्धिच्या घ्ष्टीने पाहाल. विवाह आपल्यासाठी एक उत्तेजित व इच्छित कार्य असेल. पत्नीसुद्धा बुद्धिमान असल्याने दाम्पत्य जीवन सुखी जाईल.

मुले असतील आणि त्यांचे पूर्ण सुख व सहयोग मिळेल. त्यांची पूर्ण काळजी घ्याल. उच्च शिक्षण प्राप्त करण्यात मुले यशस्वी ठरतील, वृद्धावस्थेत तुमची सेवा करतील आणि त्यांच्याकडून तुम्हाला कोणतेही कष्ट होणार नाहीत. सरकारकडून करांबाबतीत त्रास होऊ शकत असल्याने हिशोब नीट ठेवावा. जुन्या परंपरांना कधी कधी स्वीकाराल तसेच वैदिक व ज्योतिष ज्ञानसुद्धा प्राप्त कराल. संतती गुणवान, शील स्वभावाची असेल. लोकांशी प्रेमाने वागून मानसन्मान मिळवेल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये सूर्याची सिंह राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी आकर्षक व्यक्तिमत्वाची स्त्री असेल, पण स्वभाव उग्र व तीक्ष्ण असेल. सुशिक्षित असेल. दोघेही समान बुद्धिमान असाल, त्यामुळे दाम्पत्य जीवन चांगले जाईल. समानतेवर विश्वास असल्याने मनामध्ये भेदभाव असणार नाही. सुनियमित, प्रामाणिक, सरळ स्वभावी तसेच कुटुंबामध्ये शांती व सुख प्रस्थापित करणारी अशी पत्नी हवी असे आपल्याला वाटते.

आपण एक बुद्धिमान तसेच सक्रीय व्यक्ती आहात तसेच संशोधन किंवा आपल्या कामात व्यस्त राहाणे आवडते. त्यामुळे कुटुंब किंवा पत्नीला यथोचित वेळ देणे आपल्याला शक्य होणार नाही. यातून अनेकदा परस्परांमध्ये विवाद व मतभेद निर्माण होण्याची शक्यता असल्याने अशी स्थिती शक्यतो उत्पन्न होऊ देऊ नका. मिथुन, कन्या लग्नामध्ये जन्मलेल्या जातकाशी विवाहसंबंध किंवा व्यापारामध्ये आदर्श भागीदारी होऊ शकते. चांगल्या संधीची वाट पाहण्याचे धैर्य आपल्याकडे आहे. कौटुंबिक सुखाचा प्राप्तीसाठी पैसा हे मुख्य साधन असे आपण मानता. व्याख्याता, ज्योतिषी, खाण, कंत्राटदारी, वंशपरंपरागत व्यवसाय तसेच रासायनिक वस्तूंचा व्यापार किंवा संबंधित विभागामध्ये नोकरी आपल्यासाठी लाभदायक ठरेल. याव्यतिरिक्त आपली पत्नी उग्र स्वभावाची, अधिक पैशाची अपेक्षा ठेवणारी, कार्यतत्पर असल्याने दाम्पत्य जीवन सामान्यपणे चांगले जाईल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य साधारण असेल आणि मानसिक घ्ष्ट्या त्रासलेले असतील, पण पराक्रमी, साहसी, घ्ढनिश्चयी असतील. आर्थिक बाबतीत ते भाग्यवान असतील आणि त्यांना अपेक्षित वस्तू नेहमी प्राप्त होतील. व्यक्तिमत्व आकर्षक असेल आणि समाजामध्ये मानसन्मान व प्रतिष्ठा मिळेल.

जीवनात अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त करण्यासाठी आपण विज्ञान, कार्यकारी पद तसेच प्रसिद्ध उद्योगामध्ये उच्चपदावर नियुक्त होऊ शकाल. व्यापार, ज्योतिष, कायदा, आर्थिक किंवा शिक्षण सल्लागाराच्या रूपानेही आपण यशस्वी होऊ शकाल. औषधीसंबंधी कार्यातूनसुद्धा आपल्याला उचित लाभ मिळेल. आपले काम शांत व कष्टाने करण्याचा प्रयत्न कराल. व्यवसायात यशस्वी होण्यामागे हेच इंगित असेल. राजकारणात प्रवेश करण्याची तीव्र इच्छा असली तरी त्यात यश थोडेच मिळेल. आर्थिक बाबी तसेच कोणतीही योजना पूर्ण करण्यासाठी सहकारी मदत मिळेल. वडिलांच्या आज्ञेत असाल. आपण सत्कर्मी, धार्मिक खर्च करणारे पण कधी कधी कठोर वागाल.

फलादेश - 2026

गोचरीने यंदा गुरु नवम भावात आहे. म्हणून हे वर्ष भाग्यकारक असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ व परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. यंदा चांगळी व महत्वाची ळांबळेळी कार्ये होतीळ व व्यापार किंवा नोकरीत ळाभदायक योजनांची सुखात होईळ. त्याचबरोबर नोकरी किंवा राजकारणात महत्वाचे पद मिळेळ. समाजात मान–सन्मान व प्रतिष्ठा वाढेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात धनळाभ होईळ. उपर्युक्त चांगल्या फळात वेळप्रसंगी कमतरता जाणवेळ. पण सामान्यतः परिणाम चांगळे असतीळ.

गोचरीने शनी यंदा पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. दृष्टिकोनात बदह संभवतो. त्याचबरोबर सांसारिक कार्ये परिश्रम व उत्साहाने सम्पन्न कराळ व त्यात कमीजास्त प्रमाणात सफळता पण मिळेळ. अन्य ळोकांशी संबंध सामान्य असतीळ व मान मिळेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. संतती सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ते आपल्या कार्यक्षेत्रात सफळता मिळवतीळ. त्याचबरोबर कौटुंबिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होऊ शकते.ह्या काळात अन्य गोचर चांगळे असेळ पण दशा विशेष अनुकूळ नसेळ त्यामुळे महत्वाच्या कामात अडथळे येऊ शकतात. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. ह्या वर्षी राजकीय ळोकांशी संपर्क येऊ शकतो. पण त्यांच्यापासून ळाभ कमीच होईळ. त्यामुळे कष्टपूर्वक कार्य सम्पन्न करण्यास तत्पर असावे.

गोचरीने यंदा राहू यतुर्थात व केतू दशमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः सुखाचे असेळ. ह्या काळात प्रसन्नता अनुभवाळ व वेळ आनंदात व्यतीत कराळ. यंदा जमीनीची किंवा वाहनाची खरेदी–विक्री करण्याची संभावना आहे. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात उन्नतीपथावर अग्रेसर व्हाळ. परंतु आई–वडिळांकरता हे वर्ष मध्यम असेळ. त्यांना शारीरिक किंवा मानसिकदृष्टया त्रास संभवतो. यंदा तुमचे प्रवासाचे योग आहेत. ह्या काळात गोचरफळ चांगळे नसळे तरी दशा शुभ आहे. त्यामुळे सुखातीळा शुभ फळे कमी वाटळी तरी शेवटी ती वाढतीळ.

रवि ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 01/10/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि एकादश भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहे। पण बुध दशम् भाव मधीं वृश्चिक राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः ह्या समय वर तुमची इच्छा आणि महत्वा कांक्षा पूर्ण होणारी सगड़े लाभ होणार मोठे अधिकारयां बरोवर संवन्ध स्थापित होणार. व्यापार आणि व्यवसाय मधे लाभ होणार तसेच नवीन कार्य`से स्थापित होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर सम्बन्ध स्थापित होणार काही तरी फायदे ची प्रवास सम्पन्न होणारी आणि भविष्य साठी लाभ होणार. कुटुम्ब मधे सुख शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार घरगुती वस्तु खरेदी साठी खर्चे पण होणार. शत्रु पासून सावध

रहायला पाहिजे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि महत्व पूर्ण आहे अतः वांछित सफळता देणार. व्यापार मधे लाभ होणार आणि उन्नती योग आहे नोकरी मधे उन्नती होणारी तसेच अधिकारयां बरोवर सम्बन्धस्थापित होणार. कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी परस्पर स्नेह रहणार. समाजातीळ प्रतिष्ठा आणि यश प्राप्त होणार तसेच सम्मान प्रभावित होणार असे समय वर फायदे साठी प्रवास होणारी अतः असे समय चा सदपुयोग करावे.

फलादेश - 2027

यंदा गोचरीने गुरु दहाव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नतीकरता काळ अनुकूळ आहे. इच्छित सफळता मिळवव्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यकती किंवा उच्चाधिकांन्यांकडून ळाभ व सहयोग मिळेळ. राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळू शकतो. ह्या काळात कुटुंबात सुख–शान्ती राहीळ व सर्व ळोक परस्परांवर प्रेम करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष, चांगळे असेळ व भरपूर धनळाभचे योग संभवतात. पण या काळात कष्ट अधिक होतीळ व विश्रांतीचा अभाव असेळ. त्याचबरोबर इतरांशी चांगळे संबंध ठेवावे. अन्य गोचरफळ व दशा अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे आहे.

यंदा शनी सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात महत्वाचे प्रवास सम्पन्न होतीळ व व्यापारात किंवा नोकरीत सफळता मिळेळ. आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनळाभ संभवतो. व्यापारात उन्नती पथावर अग्रेसर व्हाळ. शत्रु भयभीत असेळ. एखाद्या स्पर्धात्मक परिक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण चांगळी आहे. त्यामुळे हे वर्ष सौभाग्यकारक असून प्रसन्नपणे समय व्यतीत कराळ. त्याशिवाय सामाजिक प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्वत्र आदर मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

रवि महादशा 07/08/2027 ला समाप्त होणारी तसेंच त्या वेळी चन्द्र ची महादशा प्रांरभ होणारी। ह्या तुमचा जीवन मधीं परिवर्तन चा लक्षण आहे। ह्या वर्ष रवि ची महादशा मधीं बुध चा अंतर पासून शुरु होत आहे। रवि ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 13/12/2027 ला समाप्त होणार। नंतर चन्द्र ची अंतर्दशा 13/10/2029 ला समाप्त होणारी।

हा समय तुमचा साठी शुभ आहे अतः शुभ आणि विशेष कार्य सफळ होणार. व्यापार मधे लाभ होणार नोकरी मधे उन्नती प्राप्त होणारी अधिकारयां बरोवर मधुर संवन्ध रहणार उन्नती साठी स्थान परिवर्तन होउ सकतो. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि परस्पर सहयोग रहणार कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार. मोठे अधिकारयां पासून संवन्ध स्थापित होणार तसेच सहयोग प्राप्त होणार अतः समय सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफळ होणरी आणि कार्य क्षेत्र मधे सफळता भेंटणारी. नौकरी मधे उन्नति होउ सकतो तसेच लाभ मार्ग

भेंटणार अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. कुटुम्ब मधे सुख सहयोग आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार तसेच प्रभावशाली माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार आणि इच्छित लाभ आणि सहयोग भेंटणार. समाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा भेंटणार आणि समाज प्रभावित होणार. अतः समय सदुपयोग कराय साठी प्रयत्न करावे. बायको चा स्वास्थ्य अनुकूळ रहणार, जोखम कार्य पासून सावध रहावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल आहे अतः ह्या वेळी आत्म विश्वास पासून समस्या समाधान करणारे. तसेच विशेष सफळता प्राप्त करणारे. वर्तमान कार्य क्षेत्र मधे उन्नती मार्ग वर चलणारे आणि व्यापार कार्य करणारे. नोकरी मधे उन्नती करणारे उच्च अधिकारयां पासून मधुर संबन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होणार कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी तसेच परस्पर सहयोग रहणार. व्यपार क्षेत्र सम्बन्धी प्रवास होउ सकतो आणि धन लाभ होणार. अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

यंदा गोचरीने गुरु दहाव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष चांगळे असेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नतीकरता काळ अनुकूळ आहे. इच्छित सफळता मिळवव्यास समर्थ असाळ. त्याचबरोबर राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यकति किंवा उच्चाधिकांन्यांकडून ळाभ व सहयोग मिळेळ. राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळू शकतो. ह्या काळात कुटुंबात सुख–शान्ती राहीळ व सर्व ळोक परस्परांवर प्रेम करतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष, चांगळे असेळ व भरपूर धनळाभचे योग संभवतात. पण या काळात कष्ट अधिक होतीळ व विश्रांतीचा अभाव असेळ. त्याचबरोबर इतरांशी चांगळे संबंध ठेवावे. अन्य गोचरफळ व दशा अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे आहे.

यंदा शनी सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात महत्वाचे प्रवास सम्पन्न होतीळ व व्यापारात किंवा नोकरीत सफळता मिळेळ. आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनळाभ संभवतो. व्यापारात उन्नती पथावर अग्रेसर व्हाळ. शत्रु भयभीत असेळ. एखाद्या स्पर्धात्मक परिक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण चांगळी आहे. त्यामुळे हे वर्ष सौभाग्यकारक असून प्रसन्नपणे समय व्यतीत कराळ. त्याशिवाय सामाजिक प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्वत्र आदर मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

महादशा आणि अंर्तदशा स्वामी दशम् भावात वृश्चिक राशि मधीं स्थित आहे।

फलादेश - 2029

यंदा गोचरीने गुरु अकराव्या भावात आहे. म्हणून हे वर्ष तुमच्चासाठी अत्यंत चांगळे व सौभाग्यकारक असेळ. ह्या काळात तुम्ही भरपूर प्रमाणात धन प्राप्त कराळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. व्यापारात वा नोकरीत अपेक्षित सफळता मिळेळ. नोकरीत किंवा राजकारणात बढ़तीची शक्यता आहे. ज्योतिषशास्त्रावरचा तुमचा विश्वास वाढेळ, मानसिक संतुष्टि नुभवाळ. सामाजिक क्षेत्रात प्रतिष्ठा वाढेळ व कीर्ति दूरवर पसरेळ. ज्यामुळे ळोकांवर प्रभाव पडेळ. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचरफळ व दशाफळ पण चांगळे आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

यंदा शनी सहाव्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. ह्या काळात महत्वाचे प्रवास सम्पन्न होतीळ व व्यापारात किंवा नोकरीत सफळता मिळेळ. आर्थिक स्थिती सुदृढ़ असेळ व भरपूर धनळाभ संभवतो. व्यापारात उन्नती पथावर अग्रेसर व्हाळ. शत्रु भयभीत असेळ. एखाद्या स्पर्धात्मक परिक्षेत किंवा खटल्यात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण चांगळी आहे. त्यामुळे हे वर्ष सौभाग्यकारक असून प्रसन्नपणे समय व्यतीत कराळ. त्याशिवाय सामाजिक प्रतिष्ठा वाढेळ व सर्वत्र आदर मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

चन्द्र ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर 13/10/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ चा अंतर प्रारंभ होणार। चन्द्र दशम् भाव मधीं वृश्चिक राशि मधी स्थित आहे। पण मंगळ द्वितीय भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी अनुकूळ आणि शुभ नाय आहे अतः ह्या वेळी त्रास अनुभव करणारे, आत्म विश्वास आणि साहस ची कमी रहणारी. नवीन कार्य शु कराय साठी असमर्थ रहणारे. नोकरी मधे उन्नती साठी त्रास होउ सकतो. मोठे अधिकारयां पासून मतभेद उत्पन्न होणार कुटुम्ब मधे शुभ कार्य साठी अडचणे उत्पन्न होणारी आणि परस्पर मतभेद रहणार. प्रवास आणि संपर्क कम होणार तसेच मान प्रतिष्ठा मधे असफळता अतः संयम पासून समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी मध्यम आहे अतः शुभ अशुभ दोनी फळ प्राप्त होणार पण अशुभ फळ जास्ती प्राप्त होणार. कुटुम्ब शान्ती नाय रहणारी तसेच परस्पर मतभेद रहणार स्वास्थ्य पण प्रभावित होउ सकतो. आणि मोठे अधिकारयां पासून मतभेद रहणार विशेष कार्य सिद्धी साठी उशीर होणार अनावश्यक प्रवास पण होणार आणि गुस्से जास्ती उत्पन्न होणार

कार्य क्षेत्र मधे उन्नती सामान्य रहणार ह्या प्रकारी समय शुभ नाय आहे अतः संयम पासून समय व्यतीत करावे.

फलादेश - 2030

गोचरीने गुरु यंदा बाराव्या भावात असेळ. प्रकृती मध्यम असळी तरी मानसिकदृष्टया अशांती अनुभवाळ. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. खर्च वाढता असल्याने त्रास होईळ. यंदा एरवादे मंगळ कार्य घडेळ ज्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत उन्नतीकरता कष्ट करावे ळागतीळ व कमीअधिक प्रमाणात सफळता मिळेळ. यंदा प्रवास संभवतात. त्याचबरोबर खर्च वाढल्याने आर्थिक विषमता राहीळ. पण भविष्यात लाभ संभवतो.त्याचबरोबर या काळात अन्य गोचर शुभ पण दशा मध्यम असेळ. सांसारिक कार्यात कष्टानेच ळाभ व सुखप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर प्रयत्नपूर्वक मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत तथा दानादि करावे.

गोचरीने यंदा शनीची स्थिती सातव्या भावात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुम्ही पराक्रम व कष्टाने कार्यक्षेत्रात उन्नती कराळ. नोकरी किंवा राजकारणात एखादी सफळता मिळू शकते. ह्या काळात पत्नी व आईची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर कवचित्प्रसंगी परस्पर संबंधात तणाव निर्माण होतीळ. चिंतीत असाळ. पण दैनंदिन कार्ये कष्टपूर्वक सम्पन्न कराळ, व त्यात सफळता पण मिळेळ. आर्थिक स्थिती ह्या काळात मध्यम असेळ पण भविष्यात ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर प्रवासाचे योग आहेत. पण त्यातून ळाभ कमी व खर्च जास्त होईळ.त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ शुभ परंतु दशा विशेष अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडथळे येतीळ. पण त्यातून मार्ग काढाळ व सफळता मिळावाळ. त्याचबरोबर तुम्ही घर किंवा इस्टेटीसंबंधी एरवादी योजना बनवू शकता.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

चन्द्र ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 14/05/2030 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ द्वितीय भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहे। पण राहु प्रथम भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूळ आहे अतः सफळता प्राप्त कराय साठी सफळ रहणारे. आर्थिक स्थिति पण शुभ रहणारी आणि धन लाभ होणार, आणि कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी तसेच परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार. विद्वान आणि प्रभाव शाळी माणूस पासून संवन्ध स्थापित होणार तसेच लाम दूरी ची प्रवास आणि प्रवास पासून लाभ प्राप्त होणार.

सामाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी शत्रु पासून कोणी त्रास नाय होणार आणि भाऊताई उन्नती करणारे अतः असे समय चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारे आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका. साहस आणि आत्म विश्वास उत्पन्न होणार तसेच नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी. शत्रु असफल होणारे आणि महत्वाकांक्षा सफळ होणारी.